बौद्ध धर्म में धार्मिक क्रांति; विचारधारा एवं साहित्य में निहितार्थ मानवीय दर्शन

नाम- एस.रजनी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी-Aided), हिंदी विभाग,
मद्रास मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज, तांबरम, चेन्नई
संपर्क-9789836437
ई मेल : rajani@mcc.edu.in / rajinis126a@gmail.com

बौद्ध धर्म, आज विश्व के चार प्रमुख धर्मों में से एक है जो एक अनुभववादी व आध्यात्मिक विरोधी धर्म के रूप में परिलक्षित है। महात्मा बुद्ध ने अपनी शिक्षाओं में जो सिखाया वह निश्चित रूप से न केवल छठी शताब्दी ईसा पूर्व हेतु है, वरन् वह एक कालातीत शिक्षा है जिसकी विचारधाराओं का आज भी पालन व निरूपण किया जाता है। नि:संदेह अनुचरवर्ग द्वारा 21वीं सदी के समय एवं अनेक भावी शताब्दियों अथवा सहस्राब्दियों में भी इसका अभ्यास किया जा सकता है। आधुनिक युग में बौद्ध धर्म की एक विशेष भूमिका दर्शित होती है क्योंकि विभिन्न अन्य धार्मिक परंपराओं के विपरीत, बौद्ध धर्म ने स्वतंत्रता की अवधारणा को विशिष्ट रूप से प्रतिपादित किया है जिसकी समकालीन विज्ञान के मौलिक दर्शन के साथ गहन संबद्धता है। तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा (दलाई लामाओं को अवलोकितेश्वर का अवतार माना जाता है- एक महत्वपूर्ण बौद्ध देवता व करुणा के अवतार। दलाई लामा भी प्रबुद्ध प्राणी हैं जिन्होंने अपने स्वयं के जीवन को स्थगित कर मानवता को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से पुनर्जन्म लेने हेतु चयन किया है) ने कहा, "20वीं सदी युद्ध एवं हिंसा की सदी थी। अब हम सभी को यह देखने हेतु कार्य करने की आवश्यकता है कि 21वीं सदी शाँति एवं संवाद की है।" [1]

बौद्ध धर्म को तीन महत्वपूर्ण श्रेणियों- दर्शन, विज्ञान तथा धर्म के संदर्भ में समझा जा सकता है। इस संदर्भ में धार्मिक श्रेणी प्राय: उन आवश्यक सिद्धांतों व प्रथाओं को सम्मिलित करती है जो केवल बौद्ध धर्म हेतु अति प्रासंगिक एवं गहन चिंतन के विषय हैं, परंतु इसके विपरीत, परस्पर निर्भरता का बौद्ध-दर्शन तथा मन व मानवीय भावनाओं का बौध-विज्ञान आदि, निश्चित रूप से संपूर्ण मनुष्यों हेतु अत्यंत लाभदायक हैं। आध्यात्मिक गुरुओं ने कहा कि- जहाँ एक ओर आधुनिक विज्ञान ने शरीर व मस्तिष्क आदि के सूक्ष्म कामकाज सहित भौतिक संसार की एक अत्यधिक परिष्कृत समझ को द्रुतगति से विकसित किया है, वहीं दूसरी ओर बौद्ध-विज्ञान ने भावनाओं के विभिन्न पहलुओं व ऐसे क्षेत्र जो अभी भी आधुनिक विज्ञान हेतु नवीन हैं, की गहन समझ हेतु स्वयं को समर्पित किया है। [2]

5 ईसा पूर्व के अंत में बौद्ध धर्म ने न केवल भारत के माध्यम से, वरन् भूटान, सिलोन, बर्मा, नेपाल, तिब्बत, मध्य एशिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, चीन, जापान एवं श्रीलंका में भी अपनी पहुँच को विस्तारित किया। ये कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ मध्य मार्ग को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया था। आदि शंकराचार्य ने पुन: हिंदू धर्म का प्रसार किया तथा 7 ईसा पूर्व में, भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का पतन हो गया, परंतु यह तिब्बत एवं भूटान के उत्तर-पूर्वी हिमालयी क्षेत्रों सहित विश्व के किसी भी भाग में आज भी अक्षुण्ण है। इसे सर्वप्रथम तिब्बती राजा सोंगट्सन ग्यालपो ने प्रारंभ किया था। भारतीय पर्यटक व संत पद्मसंभव ने वर्ष 747 में बौद्ध-धर्म की शिक्षा दी तथा उसका यथोचित प्रचार व अभ्यास किया। अत: वर्तमान समय की अनुमानित बौद्ध जनसंख्या 2012 की अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट के अनुसार संपूर्ण तिबत की तीन-चौथाई बताई जाती है।

छठी शताब्दी ईस्वी के सामाजिक एवं धार्मिक नवाचार के समय गौतम बुद्ध भारत की दिव्य भूमि पर युग पुरुष के रूप में अवतीर्ण हुए। फलस्वरूप, सत्य एवं अहिंसा के प्राचीन सिद्धांतों के माध्यम से तथा उनकी गवेषणात्मक सूक्ष्म बुद्धि व सहज ज्ञान-

युक्त जिज्ञासु दृष्टि के माध्यम से पूंजीवादी विश्वासों के कृत्रिम आवरण पूर्णत: नष्ट हो गए। तथागत, (बुद्ध की विभिन्न उपाधियों में से एक-तथा बुद्ध, सिद्धार्थ, गौतम द्वारा स्वयं का विवेचनात्मक वर्णन करते हुए सर्वाधिक प्रयुक्त नाम) की सत्यान्वेषी दृष्टि के समक्ष पारंपरिक अंधविश्वास व जड़ता पूर्णत: नष्ट हो गई, परिणामत: प्राचीन मान्यताओं एवं प्रथाओं व परंपराओं आदि की नीवें दुर्बल पड़ने लगीं।

इस धार्मिक क्राँति के महान मसीहा महात्मा बुद्ध ही थे, जो समय के साथ भारतीय चिंतन की बौद्धिक एवं दार्शनिक स्वर का अपरिहार्य आधार प्रमाणित हुए। तथागत की तार्किकता, गहन विषयों की त्वरित समीक्षा तथा उनके अद्भुत रहस्योद्घाटन के प्रबल उत्साह, इस काल में प्रथम बार बुद्धि का समर्थन किया गया जिसके आधार पर समाज में प्रचलित विभिन्न मान्यताओं का पुनर्मूल्यांकन अनुसंधान के द्वारा प्रारंभ हुआ तथा सत्य-दृष्टि पूर्ण शक्ति के साथ अग्रसर हुई। अंधविश्वास तथा अचेतनता के विरोध में प्रतिवाद हुआ। त्रुटियाँ अस्वीकार की गईं। उस युग में रूढ़िवाद के विरोध में एक प्रभावी प्रतिवाद था। वास्तव में, यह युग गहन अन्वेषण का युग था जिसका प्रतिनिधित्व गौतम बुद्ध के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति ने नहीं किया। गौतम बुद्ध सिद्धांत तथा व्यवहार के यथार्थ सामंजस्य के प्रतीक थे। विशाल बौद्ध-साहित्य तथा ब्राह्मणवादी स्रोतों के परिप्रेक्ष्य में यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की धार्मिक क्राँति, अन्य देशों की भाँति, सामान्यतया आश्चर्यजनक नहीं थी।

अवश्यमेव इसके अनेक सुदृढ़ एवं प्रमुख कारण थे। उदाहरणार्थ- भारतीय वर्णाश्रम व्यवस्था, संस्कृति के नाम पर मढ़ी गई विभेदक संस्कार-व्यवस्था, सामाजिक स्तरीकरण, मानकीकरण, गतिशीलता, रूढ़िवादिता, मानव-विरोध में स्थापित स्त्री-पुरुषों की असमानता तथा दार्शनिक विचारों की गहनता आदि अनेक कारकों ने इस धार्मिक एवं सामाजिक क्राँति का नेतृत्व किया जो प्राचीन भारत हेतु अत्यावश्यक था। अत: एक धारणा विकसित हुई कि बुद्ध तथा बौद्ध-धर्म ने पुरोहितों एवं जाति-प्रधान ब्राह्मणवाद से मुक्ति के साधन के रूप में जनसमुदाय को पूर्णत: प्रभावित किया। तथागत के आकर्षक कौशल, गहन प्रभाव व प्रतिष्ठा ने उनके संपर्क में आनेवालों हेतु एक कसौटी के रूप में कार्य किया। नि:संदेह, उनकी स्वाभाविक, निर्दोष तथा गहन मानवीय संवेदनाओं से प्रेरित उनकी शिक्षाएँ, सहसा अनैच्छिक रूप से विखंडित ब्राह्मणों के समक्ष प्रतिउत्तर के रूप में प्रकट हुईं तथा सामान्यत: राजकुमारों एवं निर्धन जनमानस को संतुष्ट किया।

गौतम बुद्ध ने व्यावहारिक नेतृत्व पर बल देते हुए सामूहिक जीवन को स्वस्थ बनाया तथा साथ ही धर्म को सर्वोच्च श्रेणी पर रखा जो पाय: किसी न किसी रूप में ब्राह्मणवादी विचारधारा का प्रतिनिधि था। यह द्रुतगति से व्यक्तिगत होता गया तथा दैनिक जीवन में आचरण के रूप में प्रतिबिंबित होने लगा। जाति-भेद को समाप्त कर उन्होंने समाज के निम्न-वर्ग की स्थिति का अपेक्षाकृत उत्थान किया जिन्होंने बौद्ध-धर्म को अपनाकर सामाजिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त की।

क्रमश: क्रम में इन समस्त अवयवों ने द्रुतगति से बौद्ध-धर्म का विकास किया जो ब्राह्मणवादी धर्म की विकृतियों के परिणामस्वरूप हिंदू समाज में उभर रही अहितों के निदान हेतु समय व चेतना की आवश्यकता थीं। अपने निर्वाण से पूर्व बुद्ध पूर्णत: संतुष्ट थे कि मगध, कौशल एवं कौशाम्बी जैसे क्षेत्रों में शक्तिशाली राज्यों का प्रभुत्व था। अत: ये बौद्ध मठ संपूर्ण मध्य भारत में फैले हुए थे। बुद्ध की मृत्यु के पश्चात, उत्साही व नि:स्वार्थ बौद्ध भिक्षुओं एवं (भिक्षुणियों- भिक्षुणियाँ/सन्यासिनों/बैरागिनों) से मुक्त सुव्यवस्थित संघ ने अन्यत्र प्रचार कार्य को कुशलतापूर्वक गति दी। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में संघ-समुदाय तथा बौद्ध मठों की भूमिका अत्यंत उल्लेखनीय प्रमाणित हुई तथा बौद्ध स्थल में संध ने जो स्थान प्राप्त किया, उसका महत्व ही मुख्य मानदंड है। संघ, अर्थात संगठन अथवा समुदाय, विश्व-भर में बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के मठवासी समुदायों को संदर्भित करता है।

संघ ने सदियों से बौद्ध ग्रंथों व साहित्य आदि को धार्मिक रूप से संरक्षित एवं सुरक्षित रखा है तथा व्यापक स्तर पर बौद्ध-दर्शन को व्याख्यायित कर शिक्षा दी है। वस्तुत: संघ ने एक उत्तम बौद्ध जीवन-यापन हेतु प्रेरणा तथा मार्गदर्शन भी प्रदान किया है। भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों (सन्यासिनियों/बैरागिनों) की संख्या में वृद्धि के संदर्भ में, बुद्ध-संघ के प्रबंधन, सुव्यवस्थित एवं विनियमित करने तथा समस्त सदस्यों व सहयोगियों हेतु एक आचार-संहिता कटिबद्ध करने हेतु समय की स्वाभाविक माँग थी। संघ साधारणतयः उन भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के आदेशों को संदर्भित करता है जिन्होंने एक ऐसे जीवन-यापन की प्रणाली व सिद्धांतों को प्राथमिकता दी है जो स्पष्ट रूप से पूर्णत: धार्मिक विचारधारा पर केंद्रित होती है। इन सिद्धांतों को विनय कहा जाता है, जिसका मूल अर्थ है 'अनुशासन'।

इन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को 'भिक्कू' कहा जा सकता है जिसका शाब्दिक अर्थ 'भिखारी' होता है, क्योंकि बुद्ध व उनके अनुयायियों के पास कुछ भी नहीं था अत: उन्होंने संपूर्ण विश्व को पूर्णत: त्यागकर भोजन व भिक्षा माँगी थी। बौद्ध समुदाय भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों को भोजन, वस्त्र तथा अन्य महत्वपूर्ण आवश्यक वस्तुएँ दान में देने में प्रसन्न होते हैं क्योंकि उन्होंने धर्म हेतु स्वयं को पूर्णत: समर्पित करने के उद्देश्य से अपनी भौतिक संपत्ति व अपने पारिवारिक जीवन आदि को परिपूर्णत: त्याग दिया है।

अर्थात बौद्ध भिक्षु व भिक्षुणियाँ उत्साहपूर्वक एवं स्वेच्छा से सामान्य जन-समुदाय हेतु महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सहायता व मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। बुद्ध का शिष्य बनने हेतु तीन संपत्तियों व संसाधनों में विश्वास रखना अनिवार्य हैं- बुद्ध, धर्म तथा संघ। एक अनुयायी बनने हेतु बुद्ध में अटूट विश्वास होना चाहिए, उनकी शिक्षाओं व धर्म आदि में गहन विश्वास होना चाहिए, अध्ययन करना चाहिए, नियमों को व्यवहार में लाना चाहिए तथा संध में आपसी भाईचारे का सम्मान होना चाहिए। बौध अनुयायियों को पाँच उपदेशों का सदैव पालन करना चाहिए: किसी की हत्या न करना, चोरी न करना, व्यभिचार न करना, झूठ न बोलना, छल-कपट न करना तथा कदापि मादक द्रव्यों का सेवन न करना।[3] बौद्ध भिक्षु व भिक्षुणियाँ ध्यान कक्षाएँ आयोजित कर, सेवाएँ प्रदान कर अथवा ऐसी वस्तुओं को बेचकर आय उत्पन्न कर सकते हैं जो बौद्ध समुदाय को आर्थिक रूप से लाभान्वित कर सकते हैं।

बौद्ध साहित्य और ग्रंथों में वर्णित बौद्ध धर्म के विकास में उनके योगदान के साथ-साथ प्रमुख भिक्षुओं और भिक्षुणियों की जीवनी के संदर्भ में, एक विचारधारा स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि बौद्ध धर्म विशेषकर भिक्षुओं का धर्म है और अन्य विचारधारा ने इसी आधार पर बौद्ध समाज की परिकल्पना की है। परंतु ये दोनों विचारधाराएँ किसी भी सामान्य अवधारणा को बनाने में निश्चित रूप से सफल नहीं हैं। इसका कारण यह है कि बौद्ध धर्म व संघ के मध्य का संबंध अन्योन्याश्रित है; हालांकि, बौद्ध समाज के रूप में बौद्ध संघ का विकास वास्तव में दिखाई नहीं दे रहा है क्योंकि जो आदर्श निर्धारित किए गए थे, वे भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों हेतु थे। अलगाव के इस प्रतिरूप की दृष्टि से बौद्ध धर्म का समाज से गहरा संबंध होना असंभव है फिर भी विकास के क्रम में यह आश्चर्य की बात कदापि नहीं है कि बौद्ध धर्म के व्यापक प्रसार हेतु भिक्खु-भिक्खुनी संघ (भिक्षुओं व नन संघ) की संख्या में वृद्धि तथा इसके मठवाद आदि ने बौद्ध संघ को समाज के साथ संबंध बनाने हेतु विवश किया। .

बौद्ध भिक्षुओं व भिक्षुणियों का जीवन पूर्णत: भिक्षा प्राप्ति की अवधारणा पर ही आधारित था तथा जिनके लिए न्यूनतम निर्धारित निर्देशों की मूल आवश्यकता बिना विकल्प के बलिदान थी अत: सौंदर्य श्रृंगार आदि को दंडनीय माना जाता था। भिक्षुओं व भिक्षुणियों के प्रत्येक आचरण से उच्चतम स्तर की शिक्षा एवं संपर्क के व्यापक स्तर के त्याग आदि को नि:संदेह मानव समाज तथा महात्मा बुद्ध द्वारा उद्भूत भिक्षु-भिक्षुणी संघ हेतु एक विश्वसनीय उपहार कहा जा सकता है। साथ ही यहाँ यह कहना भी अप्रासंगिक नहीं होगा कि बौद्ध भिक्षुओं व भिक्षुणियों का जीवन तत्कालीन बौद्ध भिक्षुओं की तुलना में अत्यंत सरल था। बौद्ध धर्म के प्रति लोगों के आकर्षण के पीछे ऐसे बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों का जीवन निहित है, जो सरल आध्यात्मिकता तथा प्रसन्नता से ओत-प्रोत हैं। यह निश्चित रूप से तथागत का ही आकर्षण था।

नि:संदेह, तथागत ने भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों की कठिनाइयों को देखते हुए 'विनय' के नियमों को यथासंभव संशोधित करने की अनुमति दी, परंतु साथ ही बाद में उन्हें भक्तों द्वारा उनके कल्याण हेतु दिए गए समस्त भिक्षाओं को स्वीकार करने की भी अनुमति दी। यह भावी पतन के कारण का केवल एक भाग था जो प्रभावित हुआ, जिसे कदापि बौद्ध विहित प्रणाली तथा एवं भिक्षुणियों की जीवन शैली एवं नियमों आदि का दोष नहीं कहा जा सकता है, वरन् उस समस से समाज व उसकी निरंतर परिवर्तित होती परिस्थितियों का व स्थिति आदि का दोष कहा जा सकता है। इसका कारण यह है कि बौद्ध धर्म आंतरिक शुद्धता का उद्घोषक था। उसमें ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मोह, भ्रम, उपभोग-खपत, तृष्णा तथा अभीप्सा आदि के स्थान पर मन में मुक्ति, बुद्धि व विवेक आदि हेतु ही प्रमुख स्थान था। इस जन्म में, केवल वे लोग जो वास्तविक जीवन में रहते थे, वास्तविक श्रमण-ब्राह्मणों के नाम से सुशोभित थे तथा सदाचार (सद्द धर्म) में प्रेम, मित्रता व उपेक्षित मन को प्रधानता मिली। पूर्व के भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के नेतृत्ववाले विलासी जीवन के महत्व एवं भिक्षुओं की सुविधा का अनेक सदियों पश्चात वर्णन करना, विशेषरूप से प्रारंभिक मध्य युग में, सटीक मूल्यांकन से परे होगा। तथापि, बौद्ध भिक्षुओं को सामान्य सात्विक जीवन का पक्षधर कहना अनुचित होगा, क्योंकि अनेक दुष्ट भिक्षुओं व भिक्षुणियों की कथाएँ व दृष्टांत भी अनुपयुक्त रहे हैं।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार तथा ईर्ष्या के समूह को षड्वर्ग कहा जाता है। षडवर्ग-भिक्षु, बुद्ध की भावनाओं के विपरीत कार्य करने हेतु कुख्यात रहे हैं। इस दृष्टान्त के पश्चात भी बौद्ध भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात आविर्भूत करना निरर्थक है। यदि ऐसे भिक्षुओं को शासन-विरोधी कहा जाता है, तो यह उचित होगा क्योंकि ऐसे भिक्षुओं की न केवल समाज एवं संघ में निंदा की जाती थी, वरन् अच्छे स्वभाव के भिक्षुओं को भी ऐसे भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों द्वारा क्षति नहीं पहुँचाई जाती थी।

गौतम बुद्ध का विवेक, परिपूर्ण होने के कारण, चरम पक्षपात से दूर रहता है तथा एक संयम बनाए रखता है जिसका वर्णन करना सभी शब्दों से परे है। सर्वज्ञानी होने के कारण वे प्रत्येक मनुष्य के विचारों व भावनाओं को जानते हैं तथा इस संसार में सबकुछ एक पल में जानने की क्षमता भी रखते हैं। बुद्ध की बुद्धि लोगों के शुष्क मस्तिष्क को ताज़ा करती है, उन्हें प्रबुद्ध करती है

तथा उन्हें इस संसार का महत्व, इसके कारण एवं इसके प्रभाव, प्रकट होना और अदृश्य होना सिखाती है। वास्तव में, बुद्ध की बुद्धि की सहायता के अतिरिक्त संसार का कौन-सा पहलू लोगों हेतु बोधगम्य है? [4]

इस प्रकार, इन विचारों से नैतिकता तथा वास्तव में बौद्ध दृष्टिकोण, निश्चित रूप से ज़िम्मेदारी व ज़िम्मेदाराना व्यवहार आदि की नैतिकता का विषय है। अन्योन्याश्रितता के एक विशिष्ट दृष्टिकोण से उत्पन्न एक दायित्व, अन्य के प्रति, ग्रह के प्रति हमारी जवाबदेही, अंतर्संबंधों के प्रत्यक्ष दावों में, अहंकार को शाँत करते हैं तथा हमें करुणा के साथ संसार में जीवनयापन हेतु प्रोत्साहित करते हैं।

बौद्ध परंपरा इस विषय को स्वीकार करती है कि जीवन जटिल है जो अनेक कठिनाइयों को जन्म देता है, परंतु यह परामर्श नहीं देता कि कोई ऐसी उपचारात्मक कार्रवाई है जो समस्त परिस्थितियों में उपयुक्त होगी। वास्तव में कार्यों के उचित अथवा अनुचित होने के विषय पर विचार करने के स्थान पर बौद्ध धर्म कुशल अथवा अकुशल होने के विषय पर विचार करता है। त्रिरत्न में, बुद्ध, धर्म एवं संघ आदि के तीन रत्नों में हमारी आस्था, प्रतिदिन हमारी सर्वोत्तम क्षमतानुसार, नैतिक उपदेशों से जीने की हमारी आकांक्षा में व्यावहारिक अभिव्यक्ति पाती है

इस प्रणाली में नैतिक व्यवहार, अधिक वांछनीय पुनर्जन्मों को निर्धारित करने एवं अंततः ज्ञान उपार्जित करने अथवा भावी पुनर्जन्मों से पूर्ण मुक्ति पाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नैतिकता सहायक प्रथाओं, कथाओं एवं परंपराओं के सांस्कृतिक आव्यूह के भीतर अंतर्निहितता के माध्यम से सुसंगतता प्राप्त करती है। बौद्ध धर्म इन तीनों को सहर्ष प्रदान करता है। बौद्ध-नैतिकता परंपरागत रूप से इस बात पर आधारित है कि बौद्ध, बुद्ध अथवा बोधिसत्व की भाँति अन्य प्रबुद्ध प्राणियों के प्रबुद्ध परिप्रेक्ष्य के रूप में क्या देखते हैं।

बौद्ध धर्म ने साहित्य के क्षेत्र में भी अमूल्य योगदान दिया है। विशाल तथा विविध प्रकृति का एक विशिष्ट साहित्य, जन-साधारण की लोकप्रिय भाषा में निर्मित किया गया था। त्रिपिटक तथा जातक को बौद्धों की अति अनिवार्य साहित्यिक कृतियाँ कहा जाता है। उन्हें उच्च व सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रदान किया जाता है तथा उनका विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है। ये साहित्यिक कृतियाँ मूल रूप से पाली भाषा में लिखी गई थीं, जो जनसाधारण की भाषा मानी जाती थी। बौद्धों ने त्रिपिटकों तथा जातकों की साहित्यिक कृतियों को सदैव उसी प्रकार का सम्मान दिया व उन्हें ब्राह्मणों द्वारा वेदों को दिए जानेवाले सम्मान के समान ही सर्वोच्च सम्माननीय स्थान पर रखा। इन साहित्यिक कृतियों का अत्यंत ऐतिहासिक महत्व होता है क्योंकि ये प्राचीन भारत के प्रारंभिक इतिहास के विषय में अधिक जानने में हमारी मदद करती हैं।

इन कार्यों के अतिरिक्त, एक बड़ी संख्या में बौद्ध विद्वानों ने विभिन्न सामाजिक पहलुओं से संबंधित अनेक अन्य साहित्यिक रचनाएँ भी लिखीं। इन साहित्यिक कृतियों में लेखक अमर सिंह द्वारा रचित अमरकोश, सुंदरानंद (कविताएँ) तथा लेखक अश्वघोष द्वारा रचित 'बुद्ध चरित्र' (बुद्ध का कार्य), बुद्ध का महाकाव्य आदि प्रमुख हैं। लेखक अश्वघोष ने संस्कृत में 'राष्ट्रपाल' तथा 'सारिपुत्र' नामक दो नाटक भी लिखे। एक अन्य बौद्ध विद्वान नागार्जुन ने 'आयुर्वेद' विषय पर आधारित एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ भी लिखा। कुछेक अन्य बौद्ध विद्वानों द्वारा निर्मित अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ मलिंदपन्हो, महावस्तु तथा दीर्घनिकाय आदि भी प्रमुख थीं।

जर्मन में जन्मे अर्थशास्त्री, संरक्षणवादी तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली विचारक जिन्होंने संपूर्ण विश्व को एक व्यवस्था की दृष्टि से देखा, वे थे अर्नेस्ट फ्रेडरिक फ्रिट्ज़ 'शूमाकर'। "स्मॉल इज ब्यूटीफुल" शीर्षक से लिखी अपनी अंग्रेज़ी पुस्तक में उन्होंने स्पष्ट लिखा है: "बौद्ध अर्थशास्त्र आधुनिक भौतिकवाद के अर्थशास्त्र से अत्यंत पृथक होना चाहिए, क्योंकि बौद्ध सभ्यता के सार को मानवीय आवश्यकताओं के गुणन में नहीं वरन् मानव चरित्र की शुद्धि में देखते हैं।"[5]

"क्रोध को दया से, बुराई को अच्छाई से, स्वार्थ को उदारता से तथा असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।"[6]

1) (https://www.biography.com/religious-figure/dalai-lama)
2) इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च-वॉल्यूम 3, अंक 7, जुलाई 2014
3) द टीचिंग ऑफ बुद्धा (बुक्क्यो डेंडो क्योकाई (सोसायटी फॉर द प्रमोशन ऑफ बुद्धिज्म, टोक्यो, जापान) – पृ.सं.- 200
4) द टीचिंग ऑफ बुद्धा (बुक्क्यो डेंडो क्योकाई (सोसायटी फॉर द प्रमोशन ऑफ बुद्धिज्म, टोक्यो, जापान) – पृ.सं. -34
5) धर्मपदा (आर लॉय डेविड, द ग्रेट अवेकनिंग: ए बौद्ध सोशल थ्योरी,